ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-हिन्दी(काव्य-खंड)

दिनांक—22/04/2021 साखियाँ-कबीरदास

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी ई आर टी पर आधारित

साखियाँ

-कबीरदास

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।

मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं। 1।

भावार्थ : मानसरोवर स्वच्छ जल से पूरी तरह भरा हुआ है। उसमें हंस क्रीड़ा करते हुए मोतियों को चुग रहे हैं। वे इस आनंददायक स्थान को छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना चाहते हैं। आशय यह है कि जीवात्मा प्रभु भक्ति में लीन होकर मन में परम आनंद सुख लूट रहे हैं। वे स्वच्छंद होकर मुक्ति का आनंद उठा रहे हैं।वे

इस सुख (मुक्ति) को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाना चाहते हैं।
~~~~~~~~~~

शब्दार्थ :

मानसरोवर-तिब्बत में एक बड़ा तालाब, मनरूपी सरोवर अर्थात् हृदय । **सुभर**-अच्छी तरह भरा हुआ। **हंस**-हंस पक्षी, जीव का प्रतीक । **केलि**-क्रीड़ा । **कराहि**-करना । **मुक्ताफल**-मोती, प्रभु की भक्ति । **उड़ि**–उड़कर । **अनत**-अन्यत्र, कहीं और। **जाहि**-जाते हैं।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।

प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।2।

भावार्थ : कवि कहते हैं कि मैं ईश्वर प्रेमी अर्थात् प्रभु-भक्त को ढूँढ़ता फिर रहा था पर अहंकार के कारण मुझे कोई भक्त न मिला। जब दो सच्चे प्रभु-भक्त मिलते हैं तो मन की सारी विष रूपी बुराइयाँ समाप्त हो जाती हैं तथा मन में अमृतमयी अच्छाइयाँ आ जाती हैं।

शब्दार्थ : **प्रेमी**-प्रेम करने वाले (प्रभु-भक्त)। **फिरौं**-घूमता हूँ। **होइ**-हो जाता है।

क्रमश: